राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
स्व. आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कारः
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

पाठकानां रुचिं दृष्ट्वा, समाचार-प्रकाशकाः ।
सम्पादका अनल्पा न, विरला एव केचन ॥२८२॥

पाठकों की रूचि देखकर समाचार प्रकाशित करने वाले सम्पादक अधिक नहीं हैं, कुछ विरल ही हैं ।

There are not many; nigh rare are those editors that publish the newspaper according to the desires of the readers.

पात्रापात्रं विचार्यैव, यद् दानं क्रियते जनैः ।
तद् दानं व्यर्थतां नैति, यशस्तेनापि वर्धते ॥२८३॥

पात्र और अपात्र का विचार करके ही जो लोगों से दान किया जाता है, वह दान व्यर्थ नहीं होता है । उस दान से तो दानकर्त्ता का यश ही बढ़ता है ।

That donation is not wasted if it is given considering the eligibility/need of people. Such a donation increases the donors' fame.

पालनं संविद्यानस्य, जनता कुरुते न वा ।
इत्येव दर्शनं कर्म, सर्वकारस्य वर्त्तते ॥२८४॥

संविधान का पालन जनता करती है या नहीं ? सरकार का यही देखने का काम है ।

Does the public follow the constitution or not? It's the governments' duty is to see to that.

पुत्राणामात्मनो माता, नैव कष्टानि पश्यति ।
स्वयं कष्टानि भुक्त्वाऽपि, कुपुत्रानपि रक्षति ॥२८५॥

माँ अपने पुत्रों के कष्टों को नहीं देखती । स्वयं कष्ट भोग कर भी वह माता अपने कुपुत्रों की रक्षा करती है ।

A mother cannot see the suffering of her children. Even she will suffer to protect her bad children.

पुत्रीवद् यदि मन्येत, श्वश्रूः पुत्रवधूं निजाम् ।
लक्ष्म्यास्तस्मिन् गृहे वासात्, सुखं स्वर्ग्यं सुलभ्यते ॥२८६॥

यदि सास पुत्रवधू को अपनी बेटी की तरह माने, तो उस घर में दो लक्ष्मियों के निवास करने से स्वर्गीय सुख सुलभ हो जाता है ।

If a mother-in-law would treat her daughter-in-law like her daughter, then in that house, heavenly happiness would be possible as two Lakshmis, goddesses of wealth are living in the house.

पुरस्कार – प्रलोभेन, कार्यं सिध्यति सत्वरम् ।
प्रतिस्पर्धि–कृता सज्जा, परस्योत्साह–वर्धिका ॥२८७॥

पुरस्कार के लालच से काम जल्दी बन जाता है । प्रतिस्पर्धियों के द्वारा की गयी तैयारी दूसरों का भी उत्साह बढ़ाने वाली होती हैं ।

Work is quickly done because of the greed for the reward. Readiness done/achieved by the competitors increases the enthusiasm of others, also.

पुराणं पूर्णरूपेण, श्राव्यते न च वाच्यते ।
अर्जयन्ति किं पापं, कथाभट्टा ? निगद्यताम् ॥२८८॥

जब कोई भी पुराण पूर्णरूप में न सुनाया जाता है और न बाँचा जाता है, तब क्या कथाभट्ट इससे पाप अर्जित नहीं करते हैं ? बताओ ।

Doesn't the reader acquire sin when the story of any Purana is neither fully told nor heard? Do say.